भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
जी.टी. रोड, रावतपुर, कानपुर – 208 002
(उत्तर प्रदेश)
An ISO 9001:2015 Certified

(O) : (0512) 2533560, 2554746
Fax : (0512) 2533560, 2554746
Website : http://atarik.res.in
E-mail : zpdicarkanpur@gmail.com

दि. 16–07–2020

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) का 92वाँ स्थापना दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह 16 जुलाई 2020

आज भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 92वें स्थापना दिवस समारोह पर पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय नरेन्द्र सिंह तोमर, कृषि एवं किसान कल्याण एवं पंचायती राज मंत्री, भारत सरकार ने इस स्थापना दिवस समारोह का शुभारम्भ करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभी वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों को बधाई दी तथा संस्थान के अपने 10वें दशक में प्रवेश करने पर प्रसन्नता जाहिर की। इस अवसर पर उन्होंने वर्ष 2019–20 हेतु 20 विभिन्न श्रेणियों के अन्तर्गत 161 विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की जिसमें से 3 संस्थान, 2 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, 14 कृषि विज्ञान केन्द्र, 97 वैज्ञानिकों को, 30 किसानों को, 6 पत्रकारों को तथा अन्य भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 9 कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। इन पुरस्कार विजेताओं में 19 महिलायें भी शामिल रहीं। इसके अतिरिक्त राजभाषा पुरस्कार भी दिया गया। इन सभी पुरस्कारों में जिसमें सरदार पटेल उत्कृष्ट भाकृअनुप संस्थान श्रेणी में केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान कोच्चि को दिया गया तथा विश्वविद्यालय श्रेणी में गोविन्द वल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पन्त नगर, उत्तराखण्ड को दिया गया। इन पुरस्कारों में राष्ट्रीय स्तर पर पण्डित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान राष्ट्रीय प्रोत्साहन पुरस्कार संयुक्त रूप से कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया, मध्य प्रदेश व कृषि विज्ञान केन्द्र वेंकटरमन्नागुडेम, आन्ध्र प्रदेश को दिया गया। क्षेत्रीय स्तर पर अटारी जोन–3 उत्तर प्रदेश में उत्कृष्ट कृषि विज्ञान केन्द्र का पुरस्कार कृषि विज्ञान केन्द्र बस्ती को दिया गया। एन.जी. रंगा कृषि विविधीकरण किसान का राष्ट्रीय पुरस्कार मुरादाबाद जिले के प्रगतिशील किसान श्री रघुपति सिंह, जगजीवन राम अभिनव किसान पुरस्कार 2019 बांदा जिले के प्रगतिशील किसान श्री विज्ञान शुक्ला, पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय कृषि पुरस्कार 2019 बस्ती जिले के प्रगतिशील किसान श्री आज्ञाराम वर्मा को क्रमशः पुरस्कार प्रदान किया गया।

माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि किसानों का योगदान अतुलनीय है जिसमें वैज्ञानिकों के अनुसंधान की भी काफी अहम भूमिका है। इस समय दुनिया कोविड–19 वैश्विक महामारी के कारण असुविधाओं का सामना कर रही है। इसके बावजूद भी कृषि क्षेत्र संचालित रहा है जिसके लिये किसान बधाई के पात्र हैं। हम यह सुनिश्चित करें की आने वाले 100वें स्थापना दिवस पर अपने देश के पूसा संस्थान जिसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूसा नई दिल्ली के नाम से जाना जाता है, को अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान में परिवर्तित कर सकें। उन्होंने भाकृअनुप की क्षमता पर भरोसा करते हुए कहा महानिदेशक महोदय की चिन्ता बजट की कमी है जिससे आपेक्षित कार्य नहीं कर पा रहे हैं। इसको भी

दूर करने का प्रयास किया जा रहा है तथा धन उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि अनुसंधान प्रभावित न हो, इसके साथ ही उन्होंने भाकृअनुप की उपलब्धियाँ एवं आवश्यकताओं पर भी प्रकाश डाला और कहा कि ज्यादा से ज्यादा योगदान वैज्ञानिक कैसे कर सकते हैं तथा वह ऐसे कृषि नवाचार को विकसित करें जिसकी एक खासियत हो और जो स्वास्थ्य के लिये अच्छा हो। उत्पादन एवं उत्पादकता की मौसम पर निर्भरता कैसे खत्म हो सकती है और इस विषय में अधिक अनुसंधान करने की आवश्यकता है। मैं महानिदेशक महोदय से अनुरोध करूँगा कि वह अपनी पूरी टीम के साथ बैठकर, फसलों, पशु, मछली के उत्पाद की अच्छाई क्या है इस विषय पर एक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन करें तथा इससे सम्बन्धित शोध दुनिया के विभिन्न पत्रिकाओं में छपवायें जिससे कि दुनिया के मार्केट में इसका मांग बढ़ सके। आज भारत की स्थिति दलहन में ठीक है जबकि तिलहन में स्थिति ठीक नहीं है जिससे की हर वर्ष हमें 70 हजार करोड़ रुपये का वनस्पति तेल आयात करना पड़ता है। अतः मैं अनुरोध करूँगा कि पाम आयल पौधे की लम्बाई घटाने के संबंध में भी अनुसंधान किया जाये, एवं पाम आयल पालिसी की भी आवश्यकता है जिससे तिलहन की उत्पादकता बढ सके।

श्री कैलाश चौधरी, राज्यमंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार ने कहा कि भारत सरकार द्वारा विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से 2022 तक किसानों की आय को दोगुनी करना है जिसमें कि विभिन्न परियोजनाओं की काफी अहम भूमिका है। आत्मनिर्भर भारत में भाकृअनुप की भूमिका अहम है इस यात्रा को आगे बढ़ाना है, नई प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना है तथा हेल्पलाइन से किसानों को जानकारी एवं सूचनायें मिलीं। किसानों को एकीकृत कृषि प्रणाली, पशुपालन, कुक्कुट पालन पर जागरुक करने की आवश्यकता है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने जो प्रावधान किया है उसमें कृषि का बजट 30 हजार करोड़ से बढ़ाकर 1 लाख 50 हजार करोड़ से ज्यादा कर दिया है। पशुपालन और मछलीपालन से किसानों के जीवन को कैसे सुधारें तथा दुग्ध उत्पादन कैसे बढ़ा सकते हैं, इस पर भी बल देने की आवश्यकता है। इन सभी क्रियान्वयन में कृषि विज्ञान केन्द्र बहुत अच्छी भूमिका निभा सकते हैं और योजनाओं को जमीनी स्तर पर पहुँचा सकते हैं।

श्री पुरुषोत्तम रूपाला, राज्यमंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार ने इस अवसर पर कहा कि फार्म मशीनीकरण एवं अनुसंधान के माध्यम से किसानों की आय को कैसे बढ़ायें पर भी जोर दिया जाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि दलहन में सीड हब का उपयोग काफी लाभकारी रहा है। 40 हजार टन बीजों को उत्पादन हुआ है। हम चाहते हैं कि कृषि विज्ञान केन्द्र सुनिश्चित करे कि उनके जिले की बीज की जरूरत उन्हीं के द्वारा पूरी की जाये। इसके साथ ही उन्होंने नैनो टेक्नोलॉजी और केमिकल्स के कम प्रयोग पर जोर दिया। मंत्री जी ने मक्का और बाजरा में पोषक तत्वों पर अनुसंधान करने की बात कही।

इस अवसर पर डा. त्रिलोचन महापात्र महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सभी को बधाई दी और कहा कि हमें गर्व है कि भाकृअनुप ने 9 दशक सफलतापूर्वक पूरे कर लिये हैं। हरित क्रान्ति को सक्षम बनाने और देश के सभी नागरिकों को 'भोजन का अधिकार' दिलाने में भाकृअनुप की

बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पिछले 1 वर्ष में भाकृअनुप ने संस्थान को पारदर्शी एवं और अधिक जिम्मेदार बनाने हेतु प्रशासनिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक रूप से कई नये बदलाव किये हैं। हमारे शोध संस्थानों ने किसानों के लाभ हेतु अनेक नई फसल किस्में एवं तकनीकी विकसित करने के लिये कड़ी मेहनत की है। हमारा उद्देश्य केवल उत्पादन बढ़ाना ही नहीं अपितु देश के नागरिकों का पोषण सुनिश्चित करना भी है। उदाहरण के तौर पर पिछले 1 वर्ष के दौरान हमने 114 फसल किस्मों को विकसित किया जिसमें 97 जलवायु लचीली और 12 जैव विविधता वाली किस्में शामिल हैं।